रूसी लोक कथा

माशा और भालू

चित्र: एन. कोचेरगिन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

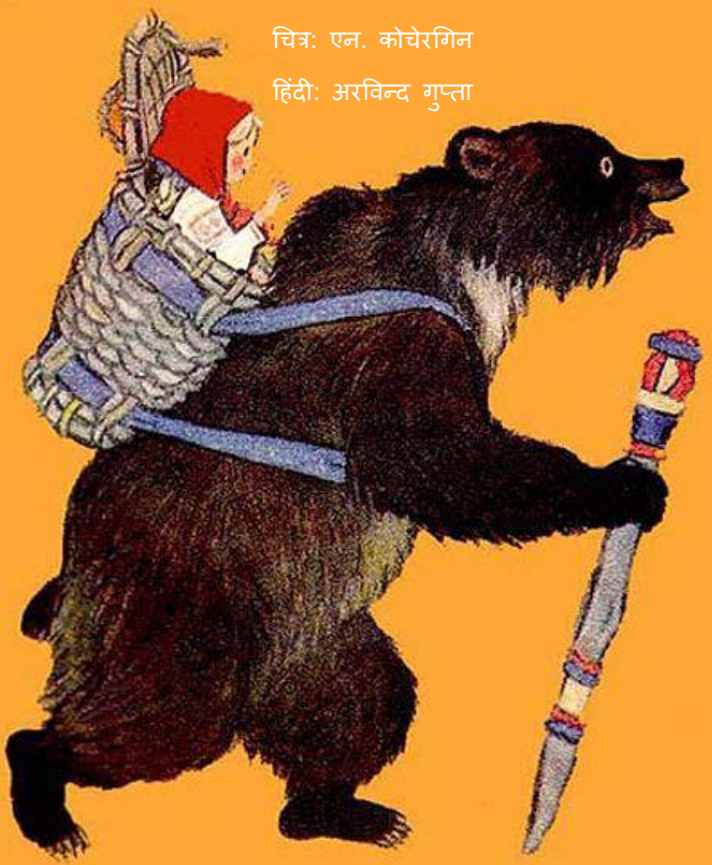

एक बार की बात है एक बूढ़ा आदमी
और एक बूढ़ी औरत रहते थे. उनकी
माशा नाम की एक पोती थी.

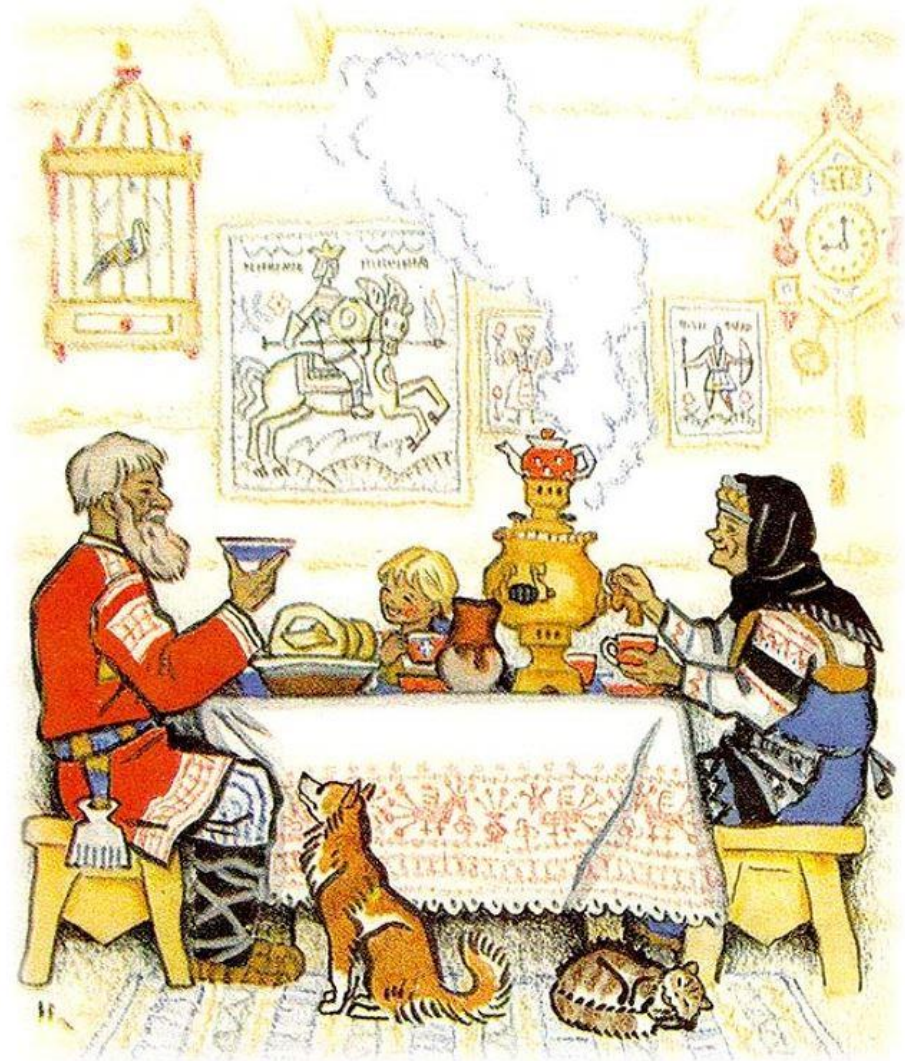

एक दिन माशा के कुछ दोस्तों ने मशरूम और बेर इकट्ठे करने के लिए जंगल जाने का फैसला किया. फिर वे माशा के घर गए और उन्होंने माशा से साथ चलने को कहा.

"दादी और दादाजी," माशा ने कहा, "कृपया, मुझे जंगल में जाने दें."

"तुम जा सकती हो, लेकिन ध्यान रखना और दूसरों के करीब रहना और उनसे नजर मत हटाना नहीं तो तुम जंगल में खो सकती हो," दोनों ने उत्तर दिया.

माशा और उसकी सहेलियाँ जंगल में गईं और फिर मशरूम और बेर इकट्ठे करने लगीं.

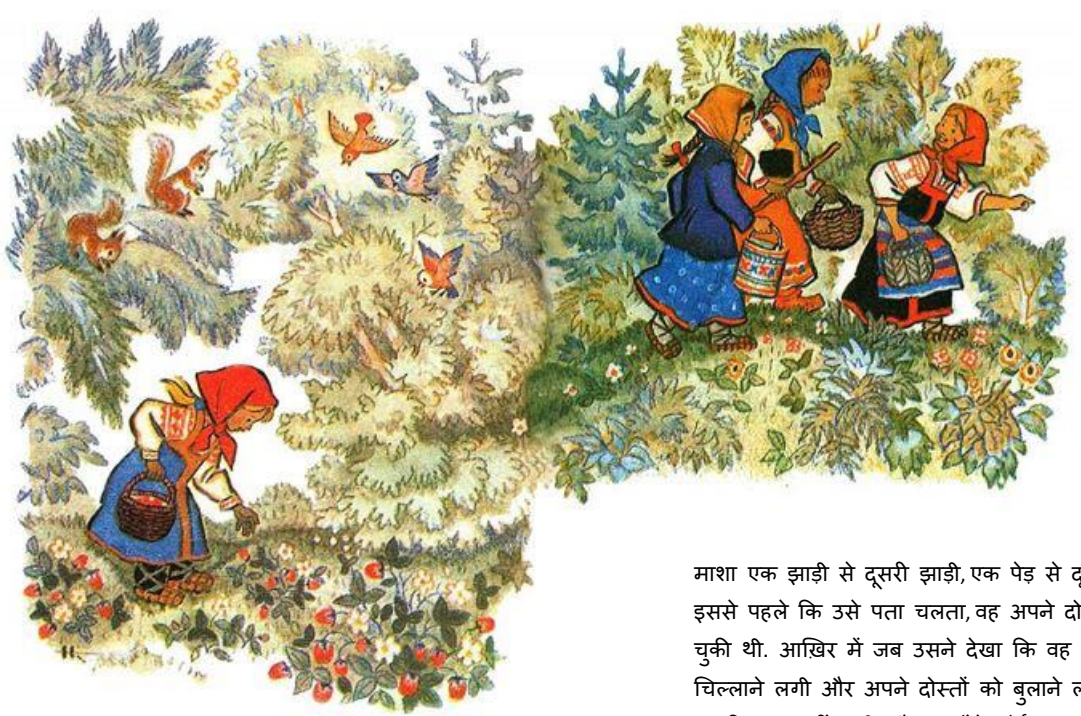

माशा एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाती रही, और इससे पहले कि उसे पता चलता, वह अपने दोस्तों से बहुत दूर भटक चुकी थी. आख़िर में जब उसने देखा कि वह बिल्कुल अकेली थी तो वह चिल्लाने लगी और अपने दोस्तों को बुलाने लगी, लेकिन दोस्तों ने उसकी बात नहीं सुनी और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया.

माशा यहां गई और वहां गई, वह पूरे जंगल में घूमी, लेकिन उसे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं मिला. अब वह बिल्कुल खो गई थी.

धीरे-धीरे वह जंगल के सबसे घने हिस्से में पहुँची, और वहाँ उसे अपने सामने एक छोटी सी झोपड़ी दिखाई दी. माशा ने दरवाज़ा खटखटाया, लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला. लेकिन जब उसने दरवाज़े को धक्का दिया, तो फिर दरवाजा खुल गया.

माशा झोंपड़ी में घुसी, वो खिड़की के पास एक बेंच पर बैठ गई. वह वहाँ बैठकर उसने सोचा:

“मुझे आश्चर्य है कि इस झोपड़ी में कौन रहता होगा? यहाँ अभी कोई क्यों नहीं है?”

अब उस झोपड़ी में एक बड़ा बड़ा भालू रहता था. उस समय वह जंगल में घूम रहा था.

जब वह घर आया तो शाम हो चुकी थी और जब उसने माशा को देखा तो भालू बहुत खुश हुआ.

"वाह!" उसने कहा, "अब मैं तुम्हें कभी जाने नहीं दूँगा! तुम चूहे की तरह चुपचाप मेरे घर में रहोगे, और मेरा नाश्ता और रात का खाना पकाओगी. तुम मेरी वफादार और अच्छी नौकर बनोगी.”

माशा कुछ समय के लिए बहुत दुखी हुई, लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ. इसलिए वह भालू के साथ रही और वो उसके घर का कामकाज करती रही.

हर सुबह भालू दिन भर के लिए जंगल में जाता था. जाने से पहले, भालू माशा से झोपड़ी में रहने और उसका इंतजार करने को कहता था.

"जब मैं दूर हूँ तो तुम भूल से भी झोपड़ी से बाहर मत जाना," भालू ने कहा, "क्योंकि अगर तुम वैसा करोगे, तो मैं तुम्हें पकड़ लूँगा और खा जाऊँगा!"

फिर माशा सोचने लगी कि भालू से कैसे अपना पिंड छुटाए. चारों ओर घना जंगल था और वो किस रास्ते जाए यह कोई बताने वाला नहीं था.

माशा ने बहुत देर तक सोचा और अंत में उसे समझ में आया कि उसे क्या करना चाहिए.

उस दिन, जब भालू जंगल से वापस लौटा, तो माशा ने उससे कहा:

“भालू, भालू, मुझे एक दिन के लिए अपने गाँव जाने दो. मैं अपने दादी और दादाजी को कुछ अच्छा खाने देने के लिए जाना चाहती हूँ.”

“नहीं, वो बिल्कुल भी ठीक नहीं होगा,” भालू ने कहा. “तुम जंगल में खो जाओगी. जो कुछ तुम उनके लिए देना चाहती हो वह तुम मुझे दे दो, और मैं उसे खुद उनके पास ले जाऊंगा.”

अब माशा बिल्कुल यही चाहती थी!

उसने कुछ बन्स पकाये, उन्हें एक प्लेट में रखा, और फिर प्लेट को टोकरी में रखकर भालू से कहा:

"मैं बन्स की प्लेट इस टोकरी में रखूंगी, और फिर आप उसे दादी-दादा के पास ले जाएँ. लेकिन ध्यान रखें, आपको रास्ते में टोकरी बिल्कुल नहीं खोलें और एक भी बन न खाएं. मैं एक बाँझ के ऊंचे पेड़ पर चढूँगी और वहां बैठकर आप पर नज़र रखूंगी!

"ठीक है, तुम मुझे टोकरी दो," भालू ने उत्तर दिया.

माशा ने कहा, "पहले ज़रा आप बरामदे में जाकर देखें कि कहीं बाहर बारिश तो नहीं हो रही है."

भालू बाहर बरामदे में गया, और फिर माशा तुरंत टोकरी में घुसकर बैठ गई और उसने बन्स की प्लेट अपने सिर पर रख ली.

भालू अंदर आया, और उसने देखा कि टोकरी उसके लिए पूरी तरह तैयार थी. इसलिए उसने टोकरी को अपनी पीठ पर लादा और गाँव के लिए निकल पड़ा.

विशाल भालू स्प्रूस-वृक्षों के बीच से गुज़रा, वह भोजपत्र के पेड़ों के झुरमुटे के बीच से गुज़रा; पहाड़ी से ऊपर और नीचे घाटी से होकर उसने एक घुमावदार रास्ता तय किया. वह बिना रुके तब तक चलता रहा जब तक कि अंत में वह थक कर चूर नहीं हो गया.

“अगर मैं अपनी हड्डियों को आराम नहीं दूंगा

तो मुझे लगता है मैं मर जाऊंगा,

इसलिए, मैं एक पेड़ के ठूंठ पर बैठूंगा

और फिर मैं एक बन खाऊंगा!”

भालू ने कहा.

लेकिन माशा ने टोकरी में से कहा:

"मैं तुम्हें देख रही हूँ! मैं तुम्हें देख रही हूँ!

ठूंठ पर मत बैठो

और मेरे बन्स मत खाओ,

उन्हें दादी के पास ले जाओ

उन्हें दादा के पास ले जाओ!”

"अरे बाप रे, माशा की आँखें कितनी तेज़ हैं," भालू ने कहा.

वह चला और वह तब तक चलता रहा जब तक उसमें एक भी कदम रखने का भी दम नहीं बचा. फिर भालू रुका और उसने कहा:

“अगर मैं अपनी हड्डियों को आराम नहीं दूंगा

तो मुझे लगता है मैं मर जाऊंगा,

इसलिए, मैं एक पेड़ के ठूंठ पर बैठूंगा

और फिर मैं एक बन खाऊंगा!”

लेकिन माशा ने टोकरी में से कहा:

"मैं तुम्हें देख रही हूँ! मैं तुम्हें देख रही हूँ!

ठूंठ पर मत बैठो

और मेरे बन्स मत खाओ,

उन्हें दादी के पास ले जाओ

उन्हें दादा के पास ले जाओ!”

भालू बहुत आश्चर्यचकित हुआ.

"माशा कितनी चतुर लड़की है!" भालू ने कहा. "वह एक ऊंचे पेड़ पर बैठी है जो बहुत दूर है, फिर भी जो कुछ भी मैं करता हूँ वह देख सकती है और जो कुछ मैं कहता हूँ वह सब सुन सकती है!"

फिर भालू अपने पैरों पर खड़ा हो गया और अब वह पहले से भी अधिक तेजी से चलने लगा.

वह गाँव में पहुंचा और उसने उस घर को ढूँढ़ा जहाँ माशा के दादा-दादी रहते थे. उसने अपनी पूरी ताकत से दरवाज़े को पीटना शुरू किया: ठोक! ठोक! ठोक!

"दरवाज़ा खोलो! मैं आपके लिए माशा के पास कुछ अच्छा खाने को लाया हूँ!" वह चिल्लाया.

लेकिन तभी गाँव के कुत्तों ने भालू को सूंघ लिया और वे चिल्लाते और भौंकते हुए हर ओर से उस पर दौड़ पड़े.

उसे भालू भयभीत हो गया, उसने गेट के पास टोकरी फेंक दी और फिर बिना पीछे देखे जंगल की ओर भाग गया!

बूढ़ा आदमी और बूढ़ी औरत गेट के पास आए और उन्होंने टोकरी देखी.

"उस टोकरी में क्या है?" बुढ़िया ने पूछा.

बूढ़े आदमी ने टोकरी का ढक्कन उठाया, और उसने जो देखा उसे देखकर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ. क्योंकि वहाँ टोकरी में माशा जीवित और स्वस्थ बैठी थी.

बूढ़ा आदमी और बुढ़िया बेहद खुश हुए. उन्होंने माशा को चूमा और गले लगाया और कहा कि वह बेहद चतुर थी. कहानी के सभी पाठक निश्चित रूप से इस बात से सहमत होंगे.